हो जाऊँ।

अध्ययन सामग्री
बी. ए. (संस्कृत) पार्ट 3
प्रश्नपत्र - षष्ठ
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज
आरा (वी. कुं. सिं. वि०)

30.05.20

केवल समास

1) समर्थः पदविधिः

सूत्र की वृत्ति है - पदसम्बन्धी यो विधिः स समर्थाश्रितो बोध्यः।

यह परिभाषा सूत्र है। इसका अर्थ है - पद सम्बन्धी विधि समर्थ पदों के आश्रित रहती है।
तात्पर्य है कि जहाँ सामर्थ्य होगा, वहीं पदविधि होती है। पद अर्थात् सुबन्त को उद्देश्य बनाकर जो विधि होती है, उसे 'पदविधि' कहते हैं। समास आदि विधियाँ पदविधियाँ हैं क्योंकि ये पदों को उद्देश्य करके ही होती हैं। सुबन्त का सुबन्त के साथ समास होता है, सुबन्त पद होता है, इसलिए समास पदविधि है। पदविधि होने से समास उन्हीं पदों का होगा, जिनका परस्पर सामर्थ्य होगा।
इस प्रकार समास शास्त्र में समर्थ पदों का ही समास विधान होता है।
जब दो पद एक दूसरे के साथ मिलकर एक हो जाने का सामर्थ्य रखता है, तब समास होता है।
सामर्थ्य का अर्थ है - जिन पदों की समास आदि वृत्ति होती हो, उनके अर्थों का परस्पर साकाङ्क्ष होना।

Scanned by CamScanner

सामर्थ्य दो प्रकार का होता है —

1) व्यपेक्षा 2) एकार्थीभाव

1) व्यपेक्षा — आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि के कारण पदों का जो परस्पर सम्बन्ध होता है, उसे 'व्यपेक्षा' कहते हैं। वह वाक्य में होती है।

उदाहरण — राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष)

1) यहाँ 'राज्ञः' कहने से अर्थ पूर्ण नहीं होता, किसी अन्य पद 'पुरुषः' आदि की आकांक्षा रहती है।

2) यहाँ 'राज्ञः पुरुषः' इन दोनों पदों की आपस में समस्त होने की योग्यता भी है।

3) 'राज्ञः पुरुषः' इन दोनों पदों के उच्चारण काल में व्यवधान नहीं होता। 'राज्ञः' कहने के तुरन्त बाद 'पुरुषः' का उच्चारण किया जाता है। अतः इन दोनों पदों (राज्ञः और पुरुषः) में व्यपेक्षा रूप सामर्थ्य होने से समास होता है।

पदों में परस्पर व्यपेक्षा नहीं रहने पर समास नहीं होता है।

जैसे — पठ पुस्तकं रक्षितं गृहमध्ये।

इस वाक्य में 'पुस्तकम्' पद का 'पठ' के साथ अन्वय है 'रक्षितं' के साथ नहीं। यहाँ 'पुस्तकम्' और 'रक्षितम्' इन दोनों पदों का परस्पर आकांक्षा सम्बन्ध नहीं होने से व्यपेक्षा सामर्थ्य के अभाव में दोनों पद समस्त नहीं होते हैं।

इसी प्रकार 'चतुरस्य राज्ञः पुरुषः' (चतुर राजा का पुरुष) में 'राज्ञः' का सम्बन्ध 'चतुरस्य' से भी है, अतः उसके प्रति साकांक्ष होने के कारण 'राज्ञः' और 'पुरुषः' में परस्पर सामर्थ्य नहीं है। सामर्थ्य न होने से उनका समास भी नहीं होता।

अतः जिन पदों में व्यपेक्षा (आकांक्षा, योग्यता और सन्निधि) हो उन्हीं पदों का समास होता है।

Scanned by CamScanner

2/ एकार्थीभाव — जहाँ पृथक्-पृथक् पदार्थों की एक साथ उपस्थिति होती है, वहाँ 'एकार्थीभाव' सामर्थ्य होता है। एकार्थीभाव समस्त पदों में पाया जाता है।
जैसे — 'शिवस्य भक्तिः' — ये दोनों पृथक् पद हैं। ये दोनों पद अपने-अपने स्वतन्त्र अर्थ की अभिव्यक्ति करते हैं, किन्तु जब दोनों पद समस्त होकर एक सुबन्त पद का रूप लेते हैं तब इन दोनों पदों के अर्थ का बोध एक साथ होता है। इसे ही 'एकार्थीभाव' सामर्थ्य कहते हैं।
इस तरह व्यपेक्षा एवं एकार्थीभाव रूप सामर्थ्य से युक्त पदों में समास होता है।

2/ प्राक्कडारात्समासः

सूत्र की वृत्ति है — 'कडाराः कर्मधारये' इत्यतः प्राक् समास इत्यधिक्रियते।
सूत्र का शब्दार्थ है — (कडारात्) 'कडार' से (प्राक्) पहले तक (समासः) समास होता है।
'कडार' का प्रयोग 'कडाराः कर्मधारये' में मिलता है। उसके पहले 'वाऽऽहिताग्न्यादिषु' सूत्र आया है। वहीं तक इस सूत्र का अधिकार है।
'कडाराः कर्मधारये' पाणिनि की अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय द्वितीय पाद का अन्तिम सूत्र है। इस सूत्र तक द्वितीय अध्याय के सभी सूत्र समास विधि से सम्बद्ध हैं। यह सूत्र समास प्रकरण की सीमा को निर्धारित करता है।
प्रकृत सूत्र में 'समास' पद समास संज्ञा का बोधक है, न कि समासविधान या अनेक पदों का एक पद बन जाने का'।

Scanned by CamScanner

सह सुपा — सुप् सुपा सह वा समस्यते

यह अधिकार सूत्र है।
सूत्र का शब्दार्थ है — (सुपा) सुप् के (सह) साथ।
इसके स्पष्टीकरण के लिए 'सुबामन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे' से 'सुप्' तथा 'प्राक्कडारात्समासः' से समासः तथा 'समर्थः पदविधिः' सूत्र से 'समर्थः' पद की अनुवृत्ति की जाती है।
'प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्' इस परिभाषा से 'सुप्' से सुबन्त का ग्रहण होता है।
सूत्र को दो भागों में बाँटा गया है —
1) सुप् समर्थेन सह समस्यते
2) सुप् सुपा सह समस्यते

पहले भाग का अर्थ है — 'सुबन्त पद का समर्थ के साथ समास होता है।'
इस विभाग के आधार पर 'सुबन्त पदों का तिङन्त के साथ समास कर सकते हैं, किन्तु यह वैदिक प्रयोगों में ही होता है। वैदिक प्रयोग की सिद्धि के लिए ही यह विभाग किया जाता है।
जैसे — परि + अभूषयत्
इसमें सुबन्त 'परि' और तिङन्त 'अभूषयत्' समस्त हो जाते हैं।
इसी प्रकार सुबन्त 'वि' पद और तिङन्त 'अचलत्' पद का समास होने पर — 'व्यचलत्' पद बन जाता है।

दूसरे भाग का अर्थ है — 'सुबन्त पद का सुबन्त पद के साथ समास होता है।'
यह अर्थ प्रायः लौकिक संस्कृत के समस्यमान पदों में चरितार्थ होता है।
उदाहरण — सुबन्त 'राज्ञः' के साथ सुबन्त 'पुरुषः' का समास होकर 'राजपुरुषः' रूप बनता है।

Scanned by CamScanner

4) सुपो धातुप्रातिपदिकयोः

सूत्र का शब्दार्थ है — (धातुप्रातिपदिकयोः) धातु और प्रातिपदिक के अवयव (सुपः) सुप् के स्थान पर।
इसके स्पष्टीकरण के लिए 'ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः' इस सूत्र से 'लुक्' की अनुवृत्ति करनी होगी।
इस प्रकार सूत्र का तात्पर्यार्थ होगा —
धातु और प्रातिपदिक के अवयव सुप् (सु, औ, जस् आदि 21 प्रत्ययों में से कोई) का (लुक्) लोप होता है।

उदाहरण — पूर्व भूतः (लौकिक विग्रह)
पूर्व अम् भूत सु (अलौकिक विग्रह)

इस विग्रह में अम् और सु का लोप 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से होगा।

रूपसिद्धिः — भूतपूर्वः
पूर्वं भूतः (लौकिक विग्रह)
पूर्व अम् भूत सु (अलौकिक विग्रह)

यहाँ 'सह सुपा' सूत्र से 'पूर्वम्' इस सुबन्त पद का 'भूतः' इस सुबन्त पद के साथ समास हुआ।
तब समास होने के कारण 'कृत्तद्धितसमासाश्च' इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा हुई।
'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' इस सूत्र से सुप् (अम् और सु) का लोप — 'पूर्व भूत' यह प्रातिपदिक बना
'भूतपूर्वे चरट्' इस पाणिनि सूत्र के प्रमाण से 'भूत' शब्द को पहले रखा गया, यद्यपि उसे 'पूर्वं भूतः' इस विग्रह में बताए गए क्रम के अनुसार पूर्व शब्द के बाद आना चाहिए था। पाणिनि ने इस सूत्र में 'भूत' शब्द का पूर्व-निपात किया है। इसी से स्पष्ट है कि पाणिनि को 'भूतपूर्वः' प्रयोग ही इष्ट था। इसी प्रामाण्य से भूत शब्द का पूर्वनिपात
— भूत पूर्व

Scanned by CamScanner

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से प्रातिपदिक संज्ञा
'स्वौजसमौट्०' सूत्र से सु विभक्ति के आने पर

भूत पूर्व सु

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से 'सु' के 'उ' की इत्संज्ञा
'तस्य लोपः' से इत्संज्ञक 'उ' का लोप

भूत पूर्व स्

'ससजुषो रुः' सूत्र से स् को रु आदेश

भूत पूर्व रु

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से 'रु' के 'उ' की इत्संज्ञा
'तस्य लोपः' से इत्संज्ञक 'उ' का लोप

भूत पूर्व र्

'खरवसानयोः विसर्जनीयः' सूत्र से 'र्' का विसर्ग (:) होने पर भूतपूर्वः पद सिद्ध होता है।

2) जीमूतस्येव —

'इवेन सह समासो विभक्त्यलोपश्च' इस वार्तिक से 'जीमूतस्य' इस सुबन्त पद का 'इव' के साथ समास।
इसी वार्तिक से विभक्ति का लोप निषेध होकर

जीमूतस्य इव

'आद् गुणः' सूत्र से गुण संधि होकर
जीमूतस्येव पद सिद्ध होता है।

*('इवेन सह समासो विभक्त्यलोपश्च' का अर्थ है - 'इव' इस अव्यय पद का सुबन्त के साथ समास होता है और विभक्ति का लोप नहीं होता)

Scanned by CamScanner